संस्कृत स्नातक सेमेस्टर-IV, MJC-V, Unit-1 साहित्यदर्पण (प्रथम परिच्छेद)

साहित्यदर्पण में काव्य-प्रयोजन

संस्कृत के शास्त्रीय ग्रन्थों में मङ्गलाचरण के पश्चात 'अनुबंध-चतुष्टय' का वर्णन प्राप्त होता है। अनुबंध-चतुष्टय में चार प्रश्नों एवं उनके उत्तरों का समावेश होता है। ये चार प्रश्न हैं - ग्रन्थ का प्रयोजन, ग्रन्थ का प्रतिपाद्य, ग्रन्थ का प्रतिपाद्य विषय से सम्बन्ध तथा ग्रन्थ पढ़ने का अधिकारी। किसी ग्रंथ का प्रयोजन जाने बिना कोई ग्रन्थ अध्ययन के लिए प्रवृत्त नहीं हो सकता। कोई भी व्यक्ति किसी प्रयोजन के बिना किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता है। संस्कृत में एक प्रसिद्ध उक्ति है - "प्रयोजनमनुद्दिश्य न मन्दोऽपि प्रवर्तते"; अर्थात् मन्दबुद्धि व्यक्ति भी निष्प्रयोजन किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता है। यही कारण है कि आचार्य भरत से लेकर आचार्य पण्डितराज जगन्नाथ तक सभी आचार्यों ने काव्य-प्रयोजन पर विचार किया है।

साहित्यशास्त्र के सभी आचार्यों के काव्य प्रयोजनों की यदि हम समीक्षा करें तो यह पाएँगे कि मुख्य रूप से दो प्रकार के प्रयोजनों का वर्णन है - व्युत्पत्ति तथा आनन्द। इस प्रकार से काव्य प्रयोजन के विषय में दो प्रकार के आचार्य हैं व्युत्पत्तिवादी तथा आनन्दवादी। अभिनवगुप्त, मम्मट धनञ्जय आदि आचार्यों ने आनन्द को प्रमुखता दी है वहीं महिमभट्ट व्युत्पत्तिवादी आचार्य हैं। यहाँ व्युत्पत्ति का अर्थ है जनकल्याण। आचार्य विश्वनाथ भी व्युत्पत्तिवादी आचार्य हैं।

विश्वनाथ के अनुसार काव्य प्रयोजन निम्न है -

चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि।
काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते॥

अर्थात् आचार्य विश्वनाथ ने न केवल अल्पबुद्धि व्यक्तियों को काव्य से चतुर्वर्ग फलप्राप्ति का संदेश दिया है बल्कि वेदादि शास्त्रों को भलीभाँति समझने में समर्थ परिणत बुद्धि वाले व्यक्तियों को भी काव्य से ही सरलता से चतुर्वर्ग फलप्राप्ति के लिए इंगित किया है।

काव्य से धर्म की प्राप्ति होती है इसलिए काव्य का अध्ययन करना चाहिए। चतुर्वर्ग में धर्म प्रथम है। शास्त्र धर्म का विधान करते हैं। शास्त्र से यों ज्ञात होता है कि क्या करणीय है और क्या त्याज्य है। यह ज्ञान रामायण आदि काव्य पाठ से भी प्राप्त होता है। विश्वनाथ कहते हैं कि 'रामादिवत् प्रवर्तितव्यं न रावणादिवत् इत्यादि कृत्याकृत्यप्रवृत्ति-निवृत्युपदेशद्वारेण सुप्रतीतैव।' रामायण से यों उपदेश प्राप्त होता है कि राम के समान आचरण करना चाहिए रावण के समान नहीं। कर्तव्याकर्तव्य विवेक प्रदान करने के कारण काव्य धर्म का लाभ कराते हैं। काव्य द्वारा ईश स्तुति की जाती है इससे भी धर्म का लाभ होता है। विश्वनाथ लिखते हैं - 'काव्याद् धर्मप्राप्तिर्भगवन्नारायण चरणारविन्दस्तवादिना।' जिस प्रकार व्रत उपवास, अनुष्ठान आदि कृत्यों के द्वारा धर्म प्राप्त होता है उसी प्रकार स्तोत्र, काव्य आदि रचनाओं द्वारा ईश्वर के गुण कीर्तन से भी धर्म की उपलब्धि होती है। इस प्रकार धर्म प्राप्ति में काव्य उसी प्रकार साक्षात् साधन है जैसे शास्त्र है। आचार्य विश्वनाथ काव्य से धर्म की प्राप्ति के समर्थन में तीसरा तर्क प्रस्तुत करते हैं -

'एकः शब्दः सुप्रयुक्तः सम्यग्ज्ञातः स्वर्गे लोके च कामधुक् भवति।'

अर्थात् एक शब्द का भी सम्यक्ज्ञान प्राप्त कर सुप्रयुक्त किया

जाए तो वह इहलोक और स्वर्गलोक दोनों में वांछित कामनाओं की पूर्ति करता है। संपूर्ण काव्य स्तुतिपरक नहीं होते हैं। मेघदूतम्, मालविकाग्निमित्रम् जैसे काव्य ईश स्तुतिपरक नहीं है। यहाँ शङ्का होती है कि इनके अध्ययन से धर्म की प्राप्ति होगी या नहीं। इसके समाधान के लिए ही आचार्य विश्वनाथ ने अत्यंत प्रसिद्ध पंक्ति को यहाँ लिखा है। यह पंक्ति अत्यंत प्राचीन है और महाभाष्यकार पतञ्जलि आदि आचार्यों ने भी इसे उद्धृत किया है। काव्य में शब्दों का सुप्रयोग होने पर ही काव्य आनन्दजनक और कर्तव्याकर्तव्य विवेक प्रदान करने वाला हो सकता है। कवि द्वारा उचित शब्दों का सुप्रयोग मंगलकारी होता है और फलस्वरूप धर्म प्रदान करने वाला भी बनता है।

चतुर्वर्ग में दूसरा है अर्थ। अर्थ की प्राप्ति भी काव्य से होती है इसलिए हमें काव्य रचना करनी चाहिए। विश्वनाथ लिखते हैं - 'अर्थप्राप्तिश्च प्रत्यक्षसिद्धा।' अर्थ की प्राप्ति प्रत्यक्ष सिद्ध है। श्रेष्ठ कवियों को पुरस्कार प्राप्त होते हैं। धावक कवि को श्रीहर्ष से धन प्राप्त हुआ था। काव्य से अर्थ की प्राप्ति के कई उदाहरण हैं।

काव्य से काम की भी प्राप्ति होती है। आचार्य विश्वनाथ लिखते हैं - 'कामप्राप्तिश्चार्थद्वारैव।' अर्थात् काम की प्राप्ति धन के द्वारा हो सकती है। धन प्राप्त होने पर किसी कामना की पूर्ति की जा सकती है। इस प्रकार काव्य से तृतीय पुरुषार्थ काम की प्राप्ति भी होती है। यहाँ यह शङ्का होती है कि काव्य रचना से कवि को अर्थ प्राप्ति होती है किंतु श्रोता को किसी धन की प्राप्ति नहीं होती है।

ऐसी स्थिति में श्रोता को काम की प्राप्ति किस प्रकार संभव है ? आचार्य विश्वनाथ स्पष्ट करते हैं कि श्रोता या पाठक काव्य सुन कर या पढ़ कर साधारणीकरण द्वारा भावों का आस्वादन करता है। काव्य सहृदय के काम को आस्वाद का विषय बनाकर उसे आह्लादनीय बनाता है। इससे काम की पूर्ति होती है।

चतुर्वर्ग में अंतिम है -मोक्ष। आचार्य विश्वनाथ ने काव्य से मोक्षप्राप्ति के लिए दो तर्क दिए हैं। वह प्रथमतया कहते हैं- 'मोक्षप्राप्तिश्चैतज्जन्यफलानुसन्धानात्।' अर्थात् इस काव्य से जनित धर्मफल के अनुसन्धान से मोक्ष की प्राप्ति होती है। धर्मफल के अनुसन्धान का तात्पर्य है फल के प्रति अनासक्ति। कर्मों के फल के साथ मनुष्य आसक्त हो जाता है। यह आसक्ति ही बंधन का कारण है। काव्य से जिस धर्मफल की प्राप्ति होती है उससे व्यक्ति उस प्रकार आसक्त नहीं होता फलतः वह मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। दूसरा तर्क आचार्य विश्वनाथ ने दिया है कि मोक्ष प्राप्ति के ग्रन्थ उपनिषद् आदि पढ़ते ही अध्येता को समझ नहीं आ जाते हैं। काव्य ग्रन्थ पढ़ने से अध्येता में समझने की व्युत्पत्ति आ जाती है जिससे वह उपनिषद् आदि क्लिष्ट ग्रंथों को समझ पाता है। इस प्रकार काव्य मोक्ष प्राप्ति के लिए उपयोगी है- 'मोक्षोपयोगिवाक्ये व्युत्पत्त्याधायकत्वाच्च।'

इस प्रकार आचार्य विश्वनाथ ने अपनी रचना साहित्यदर्पण के प्रथम परिच्छेद में काव्य के प्रयोजन की विस्तारपूर्वक चर्चा की है।